शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उपन्यासों में ग्रामीण जीवन

डॉ.मोहिनी नेवासकर, भूपेन्द्र सुल्लेरे (शोधार्थी)
हिंदी साहित्य
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

उपन्यास विधा आधुनिक काल की देन है। पूंजीवाद के विस्तार के साथ साहित्य में अनेकानेक विधाओं का प्रस्फुटन हुआ, उनमें से उपन्यास विधा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है । हिंदी में इसका विकास बँगला साहित्य के संपर्क से हुआ । औपन्यासिक तत्वों के दृष्टि से हिंदी का प्रथम उपन्यास लाला श्रीनिवास दास कृत 'परीक्षा गुरु' माना जाता है गद्य लेखन के प्रारम्भिक काल में कथा कहानियों के केंद्र में ग्रामीण जीवन हुआ करता था । ग्रामीण परिवेश का सरल सुबोध और प्रभावकारी चित्रण शिवपूजन सहाय कृत 'देहाती दुनिया' में मिलता है प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन को देखा गया है।

भूमिका

गद्य लेखन के प्रारम्भिक काल में कथा कहानियों के केंद्र में निश्चित रूप से ग्रामीण जीवन ही उल्लेखनीय होता था। ग्रामीण परिवे श का सरल, सुबोध और प्रभावकारी यथार्थ चित्रण शिवपूजन सहाय के उपन्यास 'देहाती दुनिया'में मिलता है जो 1925 में लिखा गया था।

ग्रामीण जीवन अर्थात् क्या ? जब ऐसा प्रश्न हमारे सामने आता है , तो कहा जा सकता है , जिसकी रचना खेत-खलिहान , हल-बैल, गाय-भैंस, बाग-बगीचे, फसल, हाट-बाजार, तीज-त्यौहार, मेल-मिलाप, ताल-तलैया आदि से मिलकर होती है। इसमें राजा और रंक भी होते हैं। जमींदार वर्ग से लेकर, किसान, मेहनतकश खेतिहर मजदूर भी होते हैं। पशुओं को सानी देते, गोबर काछते आदि कई तरह के लोग इसमें चलते-फिरते नजर आते हैं। गाँव में लोग अक्सर सीधा और साधारण जीवन जीते हैं। इनके जीवन में अभाव , दुःख-दर्द, पीड़ा और अवसाद भरा होता है। मगर इसी में गाँव पहचान के साथ ही उसकी खूबसूरती छिपी होती है।

डॉ.शिवकुमार मिश्र ने गाँव की ज़िंदगी का नक्शा बड़ी खूबी से खींचा है - "जन सामान्य का दैनंदिन जीवन उनके तीज-त्यौहार , क्षणभर के लिए अपनी विपदाओं को भूलकर उनमें खो जाने वाला उनका उत्साह और सांझ होते ही हथेलियों में जलपात्र लिए गाँव की बहुओं , कन्याओं का पंक्तिबद्ध होकर मंदिरों की ओर जाना , सेंदूर लपेटे गाँव के टूटे-फूटे मंदिरों के टूटे-फूटे महावीर और उनकी पूजा-अर्चना, सावन के झूले लगते ही चौपालों पर आल्हा के साथ ढोलक पर पड़ने वाली थाप, सुंदरकांड का अखण्ड पाठ, मुहं अंधेरे गलियारों को पार करती हुई बैलों के गले में बंधी घंटियों की विश्रृंखलित टुनटुनाहट , ऊँघते हुए बच्चे, प्रसन्न ग्रामीण महिलाएँ , हाँक लगाते गाडीवान, बरगद के नीचे लोगों की जमी महफिल

नाच और दारू का दौर , भूत प्रेतों की बनावटी कहानियों की शिवालयों पर होने वाली लम्बी चर्चाएँ आदि सब कुछ ग्राम्य जीवन एवं संवेदनाओं का जीता जागता दस्तावेज प्रस्तुत करता है। ऐसी बेशुमार खूबियों के मालिक हैं भारत के ये गाँव।

हिंदी के साहित्यकारों की नजरों से भारत के गाँव ओझल नहीं हुए। उन्होंने अपनी कथा के वर्ण्य-विषय ग्रामीण परिवेश से उठाये और उन्हें विस्तार प्रदान किया । उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में भारत के गाँव का सच्चा चित्र प्रस्तुत किया है। आजादी के बाद के भारतके गाँव का चित्रण श्रीलाल शुक्ल ने अपने उपन्यास 'रागदरबारी' में प्रस्तुत किया है । यह उपन्यास रिपोर्ताज शैली में लिखा गया है। इसकी कथा के केन्द्र में शिवपालगंज का कॉलेज है, किन्तु अन्य सारी समस्याएँ-स्वार्थ , मूल्यहीनता, अवसरवाद, छल-प्रपंच, नैतिक गिरावट ,कुत्सित राजनीति को उपन्यास में चित्रित किया गया है। इसी प्रकार नरेश मेहता के 'धूमकेतु: एक श्रुति' और 'नदी यशस्वी है' में एक ही कथा का निर्वाह हुआ है। इसमें ग्रामीण संस्कृति का क्रमिक पतन और एक आदर्षहीन, लक्ष्यहीन समाज के विकास का चित्रण मनोवैज्ञानिक आधार पर किया गया है।

'बलचनमा' (1952), 'मैला आँचल' (1954), 'दुख मोचन' (1956), 'कब तक पुकारूँ' (1957), 'परती परिकथा' (1957), 'गंगा मइया' (1958) 'आधा गाँव' (1966) आदि उपन्यासों में ग्रामीण जीवन के यथार्थ दर्शन होते हैं।

कुछ अन्य उपन्यास हैं, जिनमें गाँव की परिस्थितियों का विवरण मिलता है - द्रोणवीर कोहली का 'आँगन कोठा' जो सन् 1990 में प्रकाशित हुआ, जिसमें पंजाब के गाँव और वहाँ की कठिन स्थितियों का चित्रण किया गया है । संजीव ने मील मजदूरों के संघर्षपूर्ण जीवन पर 'धार' उपन्यास लिखा। जनजाति के जीवन पर मैत्रेयी पुष्पा ने 'अल्माकबूतरी' उपन्यास लिखा।

ग्रामीण जीवन और 'मंगल भवन'

विवेकी राय ने अंधविश्वास और भूत-प्रेत की समस्या पर आधारित 'मंगल भवन' उपन्यास लिखा। उन्होंने इस उपन्यास में गाँव दयालपुर में किसी पुराने सती महात्म्य को सिध्द करने वाली एक 'भुतही-गड़ही' है जिसके पूरब में एक सत्तोसती का चौरा है। जहाँ पर गाँव के नारी-पुरूष मिलकर दीपावली के रोज़ दीपक जलाते हैं और शादी-ब्याह के बाद कक्कन छुटने की रस्म अदा की जाती है। वहाँ के लोग उस चौरे की मिट्टी चुराते हैं। एक रोज पार्वती के ख्वाब में सत्तोसती रोते गिड़गिड़ाते हुए कहती है - "दयालपुर में रक्त और आगिन की बरसात होने लगेगी...दूध-पूत की भारी नागहानी होगी"....। इस प्रकार गाँव की नारियों द्वारा सत्तोसती के चौरे को नये ढंग से बनवाकर गाँव के श्रध्दा शील रूप को स्पष्ट किया है। विवेकी राय के 'नमामि ग्रामम' (1996) में दिखाया गया है कि कंजूसी तथा कृपणता केवल भोजन, वस्त्र अतिथि सत्कार तथा जानवरों को खिलाने-पीलाने , बच्चों की परवरिश वगैरह में ही नहीं की जाती अपितु देवी-देवता की पूजा-पाठ में भी कृपणता दिखाई देती है। गाँव की वृद्ध महिला की मनौती देखिए- "एक बुढिया द्वारा प्राण रक्षा के लिए नाव भर सोने की मनौती माँगना....बाद में मसूर की भूसी (खौलरी) सोने के लघु कण से भर कर गंगा में प्रवाहित करना.....हाथ जोड़कर कहना.... हे गंगा माता! छोटी नाव, नाव ही है और बड़ी नाव नाव ही है। अतः लो अपनी मनौती प्रसन्न हो जाओ।"

उपन्यासों के माध्यम से ग्रामीण जीवन के , तंत्र-मंत्र, झाड-फूंक, टोने-टोटके, ज्योतिष विद्या, ओझा आदि पर भी बहुत कुछ व्यक्त हुआ है। पीर बाबा का सहारा लेना आज भी गाँव में धडल्ले से चल रहा है। गुप्तधन प्राप्त करने की परम्परा का चित्रण 'मंगल भवन' में हुआ है - "गुप्तधन एक जगह से दूसरी जगह खिसक जाता है और जिस कलश में भरकर मुद्रायें जमीन के किसी कोने में गाड़ दी जाती हैं यदि उसे किसी ने हथियाने की कोशिश की तो उस पर बैठा हुआ सांप उसे डंस लेगा और वह मुद्रा भरा कल श वहाँ से हटकर दूसरी तरफ चला जाएगा। इस प्रकार लोगों का अंधविश्वास यह है कि ऐसे गडे हुऐ कल श पर साँप का कब्ज़ा हो जाता है जिसे बिना ओझा के हटाया नहीं जा सकता।

समकालीन हिन्दी उपन्यासों में लोकगीतों और लोककथओं का भी अच्छा -खासा वर्णन मिलता है। क्योंकि भारतीय ग्रामीण जीवन व संस्कृति में लोकगीतों और लोककथाओं की अहम भूमिका रही है। भारतीय ग्रामीण जीवन और संस्कृति को अच्छी तरह जानने और समझने के लिए लोकगीतों और लोककथाओं को जानना और समझना भी आवश्यक है, क्योंकि ग्रामीण जीवन की मार्मिक अनुभूति लोकगीतों और लोककथाओं में भरपूर देखने को मिलती है। ग्रामीण जीवन पद्धति में विविध कार्यक्रम होते हैं, भारतीय ग्रामीण जनता मनोरंजनार्थ विविध रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन करती है , जिसमें कुछ पल के लिए वह अपने दुख -दर्द, अपने गम अपनी पीडा को भूलकर मनोरंजन में खो जाते है। खेत-खलिहानों में काम करते करते ये खेतिहर मेहनतकश मज़दूर और छोटे-मोटे किसान जब थके-हारे अपने घरों को वापस आते हैं तो अपनी थकान उतारने और मन बहलाने के लिए शाम को मण्डली लगाते हैं और बैठक करते हैं तथा मिलजुलकर बिरहा, चैता, आल्हा और भजन गाते हैं अथवा किस्से-कहानियों का दौर चलता है , राजा-रानी और परियों की कहानियां सुनाई जाती हैं। इनके अतिरिक्त नाच-गानों और नौटंकी का दौर भी चलता है। मेला-त्यौहार , पूजापाठ, देवी-देवताओं की मान्यताएँ और अंधविश्वास भी ग्रामीण समाज की प्रमुख विशेषताएं हैं। इसलिए भूत-प्रेत, टोना-टोटका, गण्डा-ताबीज, तंत्र- मंत्र , मन्नत-मनौती आदि सब इन्ही लोककथाओं और किस्सा कहानियों का अभिन्न अंग है।

डॉ.उत्तमभाई पटेल के मतानुसार ग्राम जीवन में मेलों त्योहारों की प्रथा सांस्कृतिक प्रथा है। ये मेले किसी विशिष्ट त्योहार के दिन लगते है। गाँव वालों के मेले उनके बाजार भी है और सामूहिक उत्सव भी। 'मंगल भवन' में दयालपुर गाँव में रामलीला और कृष्णलीला के आयोजन का चित्रण किया है। भजन कीर्तन गायन लीला ताजिया आदि नाना प्रकार के जलसे और जश्न से गाँव को पहचान मिलती है , जिसे आज के शहरी शिक्षित वर्ग ने उपन्यासों के माध्यम से अधिक जाना है।

'नमामि ग्रामम' उपन्यास में विपत्ति की मारी एक नारी भगवान से प्रार्थना करती हुई मन में धैर्य निर्माण कर देने की विनती करती है। कष्ट दूर करने की अपनी भूख -प्यास हरण करने की विनती करती है।

"धै देत्यो राम हमारे मन धरिता हो!
हले त्यौ भुखिया पियास हमारे मन।"

मंगल भवन में लाट बाबा युद्धकाल में प्रसि द्ध भोजपुरी लोरी का राष्ट्रीय रूपांतरण बच्चों से गवा लेते थे। जो कुछ इस प्रकार से था-

"ताल काटो, तरकुल काटो, काटो बनके खुझा!
नेहरू जी की फउदि चले सगरे दुश्मन जुझा।"

'नमामि ग्रामम' में पंडित जवा हिरलाल को राजा मानकर उन्हें अपने दुख, पीडा, देश की दुरावस्था, समस्याएँ लेखक द्वारा लोकगीत की धुन में गाते हुए व्यक्त की गई है-

देश में लगी है अब तो आग, ओ जवाहर भैया।
किवनी सइतिया लीहल सासन भार, भैया जवाहर हो।

मगर अब गाँवों में परिवर्तन भी दिखाई देने लगा है। हालाकि यह परिवर्तन कोई बुनियादी परिवर्तन नहीं है फिर भी गाँव में कुछ नये उद्योग-धंधे, सडक व्यवस्था, यातायात के साधन जिसमें रेल आदि का खासा महत्व है। सडक योजना में गांव को शहर से जोडना, अब तो बडे- बडे मार्ग भी बनते जा रहे है।

'मंगल भवन' उपन्यास में विवेकीराय जी ने विकास योजनाओं के विषय में लिखा है कि - 'मंगल भवन' 1994 में भी सडक योजना की बनती हुई सुविधा का मास्टर विक्रम स्वागत करते हैं, वे पांडेय के साथ रामपुर से रिक्षा से आते समय कहते हैं - "डीलक्स बस में बैठते ही मज़ा आ गया। वर्तमान युग और उसकी सुविधाओं के प्रति कृतज्ञता का भाव भीतर उगा। पुराने समय में कोई भी नहीं करता था कि ऐसे देहात तक इतने शाही ठाठ से असमय भी पहुंचा जा सकता है।

निष्कर्ष

हिन्दी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन के सभी पहलूओं का यथार्थ, भावपूर्ण तथा समसामयिक चित्रण हुआ है। आजादी के बाद भी गाँव के मूल चरित्र में बहुत अधिक अंतर नहीं आया है। शहरीकरण की रफ़्तार ने अनेक गाँव को अपने में समा लिया है। दूर-दराज के गाँव आज भी आधुनिक सभ्यता और संस्कृति से अछूते हैं। हिंदी के उपन्यासकारों ने ईमानदारी से अपने कर्तव्य का निर्वहन किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 अक्षर वार्ता:- दिसम्बर 2014
2 अक्षरा:- जनवरी-फरवरी 2015
3 साक्षात्कार, अगस्त-सितम्बर संयुक्तांक 2015
4 वीणा, नवमबर 2015
5 हंस, अगस्त 2015
6 .हंस, सितम्बर 2015
7 नया ज्ञानोदय 2015
8 .साहित्य अमृत, फरवरी 2016
9 .राजभाषा, जनवरी-मार्च, 2004
10 हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास-रामस्वरुप चतुर्वेदी
11 नमामि ग्रामम, विवेकी राय